B.A. Part-II

Dr. Abha Dwivedi
Asst. Professor
Vaishali Mahila
College, Hajipur

Page
Date

प्रमुख गद्यकवियों एवं उनकी रचनाओं (गद्य-काव्यों का परिचय।

१) सुबन्धु → गद्यकवियों में सर्वप्रथम नाम 'सुबन्धु' का ही आता है। इनकी एकमात्र रचना 'वासवदत्ता' अलंकृत शैली में निबद्ध गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। इनके समय तथा स्थान का प्रामाणिक परिचय बात नहीं है। बाणभट्ट के द्वारा प्रशंसित किए जाने से ये बाण से पूर्ववर्ती सिद्ध होते हैं। इन्होंने न्यायवार्तिक के रचयिता उद्योतकर का स्पष्ट संकेत किया है तथा कालिदास एवं वात्स्यायन का उल्लेख किया है, जिससे ये इनके परवर्ती सिद्ध होते हैं। उद्योतकर का समय छठी शताब्दी का अन्त तथा बाण का समय ६३० ई. के लगभग है। अतएव सुबन्धु का समय ६०० ई. के आसपास मानना उचित प्रतीत होता है।

सुबन्धु नाना विद्याओं, तथा मीमांसा, न्याय, बौद्ध आदि नाना दर्शनों में नितान्त प्रवीण थे। इन्होंने श्लेष और उपमा के प्रसंग में रामायण, महाभारत तथा हरिवंश की अनेक प्रसिद्ध तथा अल्प-प्रसिद्ध घटनाओं और पात्रों का प्रचुर निर्देश कर अपनी विद्वत्ता का पूर्ण परिचय दिया है। उनकी दृष्टि में सत्काव्य में अलंकारों का चमत्कार, श्लेष का प्राचुर्य तथा वक्रोक्ति का सन्निवेश विशेष रूप से रहता है+ "सुश्लेशवक्रघटनापटु सत्काव्य-विरचनामिव"।

इसी भावना से प्रेरित सुबन्धु की लेखनी श्लेष-रचना में विशेष पटु है। उन्होंने स्वयं

Scanned with CamScanner

Dr. Abha Dwivedi
Asst. Professor
Vaishali Mahila
College, Hajipur

अपने ग्रन्थ को "प्रत्यक्षरश्लेषमय प्रपञ्चविन्यासवैदग्ध्य-निधि" बनाने की प्रतिज्ञा की थी जिसका पूर्ण निर्वाह उन्होंने अपने गद्यकाव्य में किया है। वस्तुतः श्लेष कवि सुबन्धु ने सभंग और अभंग, उभय प्रकार के श्लेषों का विन्यास कर अपने काव्य को विचित्रमार्ग का उत्कृष्ट उदाहरण बनाया है। कहीं कहीं उनके श्लेष इतने कठिन हैं कि बिना कोश की सहायता के पाठक एक पग भी आगे नहीं बढ़ पाता है। प्रसन्नश्लेष का यह उदाहरण रोचक तथा दर्शनीय है –

"नन्दगोप इव यशोदयान्वितः, जरासन्ध इव घटित-सन्धि-विग्रहः, भार्गव इव सुमित्रोपेतः, सुमन्त्राधिष्ठित-श्च, दिलीप इव सुदक्षिणयान्वितो रक्षितगुश्च।"

अर्थात्, यशोदा से अन्वित नन्दगोप के समान वह राजा यश और दया से अन्वित था, जरा के द्वारा संगठित अंग वाले राजा जरासन्ध के समान वह सन्धि और विग्रह (युद्ध) का सम्पादक था। सदा नभ में गमन करनेवाले शुक्र के सदृश वह सदा दान तथा भोग से सम्पन्न था।

इस प्रकार की शाब्दी क्रीड़ा पाठकों में कौतुक तो उत्पन्न करती है परन्तु हृदय को स्पर्श नहीं करती है। परन्तु जहाँ सुबन्धु ने श्लेष-प्रेम को छोड़कर काव्य का प्रणयन किया है, वहाँ की शैली रोचक तथा सहृदयों का पर्याप्त मनोरंजन करती है। वासवदत्ता में की गई कल्पनाओं का प्रभाव आगामी कवियों पर भी पड़ा।

'नकुलद्वेषी' पद का विलक्षण प्रयोग नितान्त आह्लाद-जनक है – विषधर तो केवल 'नकुलद्वेषी' होता है परन्तु 'न कुलद्वेषी' – अपने कुल से कभी द्वेष नहीं

Scanned with CamScanner

Dr. Abha Dwivedi
Asst. Professor
Vaishali Mahila
College, Hajipur

करता है। खल (दुर्जन) विषधर से भी विषैला होता है जो अपने ही कुल से भी द्वेष करता है।

कुन्तक द्वारा वर्णित 'विचित्र-मार्ग' का श्रेष्ठतम उदाहरण सुबन्धु की वासवदत्ता है। बाण के शब्दों में — 'कवीनामगलद् दर्पो नूनं वासवदत्तया' अर्थात् वासवदत्ता के द्वारा कवियों का दर्प गल गया। सुबन्धु की शैली दण्डी तथा बाण से स्पष्टतः पृथक् है। सुबन्धु का गद्य 'अक्षराडम्बर' का साक्षात् रूप है जो मस्तिष्क में ही कथमपि प्रवेश कर पाता है, हृदयस्पर्शी नहीं कर पाता। दण्डी की शैली तीव्र निरीक्षणशक्ति तथा यथार्थवादी शब्दविन्यास की है, तो बाण का गद्य स्निग्ध, रसपेशल 'पाञ्चाली' रीति का भव्य प्रतीक है। वासवदत्ता में इन गुणों का अभाव ही इसके अधिक लोकप्रिय न होने का कारण है, तथापि 'वक्रोक्ति मार्ग' के तीन निपुण कवियों में इनकी गणना होती है —

" सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इतित्रयः।
वक्रोक्तिमार्गनिपुणाः चतुर्थो विद्यते न वा॥ "